E Content for students of Patliputra University, Patna

आर० आर० एस० कॉलेज मोकामा

B. A. Hons. Part - 2 Paper IV

Subject - Political science

Title / Heading of Topic - India - America Relation

डॉ० उमेश चन्द्र शुक्ल, एसो० प्रोफेसर राजनीतिविज्ञान
आर० आर० एस० कॉलेज, मोकामा, पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय

भारत - अमेरिका संबंध न केवल द्विपक्षीय राजनीति बल्कि विश्व राजनीति को प्रभावित करने वाला रहा है। यही कारण है कि संपूर्ण विश्व इन दोनों देशों के संबंधों का आकलन और विश्लेषण काफी उत्सुकता के साथ करता रहा है। दोनों देशों के संबंध अपनी-अपनी नीतियों, शासकों के दृष्टिकोण तथा विश्व राजनीति में अपने हितों के आधार पर निर्धारित होते रहे हैं। फलस्वरूप संबंधों में समय-समय पर खट्टे-मीठे स्वादों का अनुभव होता रहा है। प्रारंभ में, भारतीय गुटनिरपेक्षता की नीति, उनके सैन्य संगठन में शामिल न होना, निशस्त्रीकरण के अमेरिकी प्रस्ताव को स्वीकार नहीं करना, पाकिस्तान को सैन्य सहायता आदि अनेक मुद्दे पर दोनों के संबंधों में खटास बने रहे। चीन के साथ 1962 के युद्ध में अमेरिकी राष्ट्रपति केनेडी का सहयोग कुछ अच्छे संकेत मिले; किन्तु पुनः 1965 के भारत - पाक युद्ध, 1971 के भारत-पाक युद्ध, 1974 में भारत द्वारा परमाणु बम का परीक्षण दोनों देशों के बीच खटास ही नहीं, बल्कि तनाव पैदा किया। 1977 में जनता पार्टी की सरकार के समय भी उम्मीद के बावजूद संबंध मधुर नहीं हो पाये।

1985 में भारत ने अपनी आर्थिक नीति में परिवर्तन लाते हुए उदारीकरण की नीति को अपनाना प्रारंभ किया। नरसिंहा राव की सरकार ने भारत द्वारा उदारीकरण की नीति अपनाने का विधिवत् घोषणा भी कर दी। फलस्वरूप भारत विश्व व्यापार संगठन का सदस्य भी बना। इस नीति ने अमेरिका को भारत के प्रति सहयोगात्मक रुख बनाने के लिए प्रेरित किया। वाजपेयी सरकार ने दोनों के संबंधों में मधुर सहयोगात्मक संबंध बनाने में गति प्रदान की।

कुछ दिनों के लिए वाजपेयी सरकार द्वारा परमाणु परीक्षण करने के कारण अमेरिकी प्रतिबंधों के कारण तनाव आया किन्तु इसे जल्द ही दूर कर लिया गया। भारत के विदेश मंत्री जसवंत सिंह की अनेक दौर की वार्ताएँ तथा प्रधान मंत्री वाजपेयी के राष्ट्रपति क्लींटन के साथ अच्छे संबंधों के कारण दोनों देशों के बीच मधुर संबंधों की नींव मजबूत हुई। अमेरिका के बाद के राष्ट्रपतियों - बुश, ओबामा तथा ट्रम्प को आज भारत के साथ मधुर संबंधों के महत्व को स्वीकार करना पड़ता है।

मनमोहन सिंह ने न्यूक्लियर डील के आधार पर संबंधों को आगे बढ़ाया। अमेरिका को भारत को यह छूट देनी पड़ी कि परमाणु परीक्षण निषेध ~~संधि~~ संधि पर हस्ताक्षर नहीं करने के बावजूद भारत न्यूक्लियर क्लब के सदस्य के रूप में मान्यता मिलेगी। तथा यूरेनियम खरीदने की भारत को छूट मिली।

वर्तमान समय में राष्ट्रपति ट्रम्प तथा प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी ने संबंधों के प्रवाह को उच्च स्तर तक पहुँचाने में सफलता प्राप्त की। दोनों ही व्यक्तिगत मित्रता का पुट देकर संबंधों को आगे बढ़ा रहे हैं। "हाउडी मोदी" तथा "नमस्ते ट्रम्प" के नारे और कार्यक्रम संबंधों को शिखर पर पहुँचने का अनुभव कराते हैं।

वर्तमान समय में भारत और अमेरिका के नजदीकी रिश्ते के कई आयाम हैं। सबसे बड़ी समस्या आतंकवाद की है। भारत और अमेरिका दोनों ही आतंकवाद का सामना समान रूप से कर रहे हैं। इस कारण दोनों को ही एक दूसरे की जरूरत है। पाकिस्तान आतंकवादियों का शरणस्थल है। अफगानिस्तान के तालिबानी, आई० एस० आई० के साथ अनेक शीर्षस्थ आतंकवादी संगठनों का शरण स्थल पाकिस्तान है। इस प्रकार पूर्व

के एक निर्णय के रूप में पाकिस्तान से दूरी तथा भारत से नजदीकी अपनाया गया है। भारत की भी अमेरिका से हमेशा यही शिकायत रही है कि सीमा पार आतंकवादियों का संरक्षण पाकिस्तान देता है, जिससे भारत को काफी हानि होती है। अतः पाकिस्तान को नियंत्रित करने के लिए अमेरिका हस्तक्षेप करे। यह अमेरिका-भारत के संबंधों में नजदीकी का एक महत्वपूर्ण कारण है।

द्वितीय आयाम यह है कि अमेरिका विश्व की राजनीति में बुरी तरह उलझा हुआ है ईरान, इराक, अफगानिस्तान चीन उत्तर कोरिया, हिंद महासागर पर अमेरिकी वर्चस्व का प्रयास आदि। ये सभी क्षेत्र भारत के नजदीक हैं। पाकिस्तान पर विश्वास के अभाव में उसके लिए भारत की आवश्यकता बढ़ गई है।

तृतीय, भारत एक जिम्मेवार राष्ट्र है, जिसे संपूर्ण विश्व मानता है। अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर भारत की आवाज गंभीरता से लेनी होती है अमेरिका भी यह समझता है कि भारत को उसका साथ अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर मजबूती प्रदान करेगा। आज भारत जी० २०, एशियान, संयुक्त राष्ट्र संघ आदि मंचों पर अपनी विशिष्ट पहचान बना चुका है

चतुर्थ, दोनों देशों के संबंधों के पीछे आर्थिक पक्ष भी है। भारत तेजी से उभरता हुआ आर्थिक महाशक्ति है। जनसंख्या के कारण हर देश यहां व्यापार हेतु बाजार चाहता है। अमेरिका इस कारण भारत को नजरअंदाज करने की स्थिति में नहीं है। यही कारण है कि वाजपेयी सरकार द्वारा परमाणु परीक्षण के बाद अमेरिका प्रतिबंधों को बहुत दिनों तक लगा नहीं रह सका।

पंचम, भारत के लोग नौकरी, पढ़ाई आदि कारणों से अमेरिका बहुत संख्या में हैं। इनमें बहुत वहां के नागरिक भी हो चुके हैं। वे व्यवसाय तथा राजनीति को भी प्रभावित करते हैं। नौकरी में भी बड़े बड़े वैज्ञानिक संस्थानों में भारतीय

दोनों ही प्रमुख दलों में भारतीयों की उपस्थिति रहती है, वे विभिन्न पदों पर चुनाव भी लड़ते हैं तथा राजकीय पदों पर नियुक्त भी होते हैं। भारत अमेरिकी संबंधों के बीच मधुरता लाने का यह एक महत्वपूर्ण तत्व है।

अतः, भारत के प्रधानमंत्री एवं अमेरिका के राष्ट्रपति के संबंधों में फिलहाल वैयक्तिक संबंधों का प्रभाव पड़ा है। ये संबंधों की औपचारिकता की जगह व्यवहारिक स्वीकार्यता को महत्वपूर्ण बनाते हैं। अमेरिकी राष्ट्रपति क्लिंटन, बराक ओबामा तथा ट्रम्प तथा भारतीय प्रधानमंत्री वाजपेयी मनमोहन सिंह, नरेन्द्र मोदी ने राजनीति में वैयक्तिक आयाम को अपनाया। फलस्वरूप कई पेचिदे मामले स्वतः सुलझते नजर आये।

आज भारत और अमेरिका का संबंध मैत्रीपूर्ण तथा परस्पर विश्वास का है। फिर भी दोनों के बीच कुछ मामलों पर असहमति दीख पड़ती है। ऐसे विषयों पर दोनों ही देश अपनी नीति एवं आवश्यकता के आधार पर समझने का प्रयास करते हैं। भारत ईरान पर अमेरिकी प्रतिबंध तथा तालिबान के एक गुट के साथ समझौते का विरोध करता है। भारत अपने विरुद्ध आतंकवाद की लड़ाई में अमेरिका का प्रत्यक्ष सहयोग चाहता है। अमेरिका रूस से भारत द्वारा सैन्य सामान खरीदने का विरोध करता है। उदाहरणार्थ ऐसे कुछ तनाव के बिन्दु हैं, फिर भी दोनों ही देश एक दूसरे की आवश्यकताओं एवं नीतियों को स्वीकार करते हुए परस्पर संबंधों की गति पर इसका प्रभाव पड़ने नहीं देना चाहते हैं।